© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

विकाश कुमार त्रिपाठी

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र (जे0आर0एफ0),
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (जिला–सतना) म.प्र

शिक्षा और जीवन का रिश्ता अभिन्न है। क्योंकि शिक्षा किसी भी आधुनिक सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण है और उसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण एवं बहुआयामी नहीं हो सकती। एक शिक्षित व्यक्ति, शिक्षित समाज या शिक्षित राष्ट्र ही प्रगति के दुर्गम पथ पर अनवरत यात्रा कर पाने में ही समर्थ होता है। शिक्षा पर विचार करते समय कुछ मूलभूत प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठते हैं जैसे शिक्षा क्या है? इसके उद्देश्य क्या हैं? शिक्षित राष्ट्र क्या है? और शिक्षित समाज के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये भारत किस सीमा तक सफल हुआ है? मूलभूत रूप से प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक सभी वर्गो की शिक्षा के प्रवाह को सुगम बनाने में हम कहाँ तक कामयाब हुये और कितनी दूरी अभी तय करनी शेष है? इस सम्बन्ध में सरकार के क्या दायित्व हैं? तथा एक शिक्षित नागरिक के क्या कर्त्तव्य हैं? आधुनिकीकरण, भूमण्डलीयकरण तथा आर्थिक एवं विचारों के खुलेपन के इस दौर में यह प्रश्न और भी रोचक, महत्वपूर्ण व प्रासंगिक हो जाते हैं और खासकर जब वर्तमान में अल्पसंख्यक वर्गों व मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था पर गरमागरम बहसे जारी हों, तब इन सवालों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना और भी आवश्यक हो जाता है।

किसी भी राष्ट्र के प्रगति की अनिवार्य शर्त, उस राष्ट्र के सभी वर्गों की शिक्षा आधुनिक और तकनीकी शिक्षा से सामन्जस्य स्थापित किये हुये हो। यह बात पूर्णतः सत्य है कि आज का समाज तकनीकी पर आधारित है। वर्तमान युग में विज्ञान ने अपने नित नये चमत्कारिक तथा उपयोगी अविष्कारों से हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में वैज्ञानिक खोजों से लाभान्वित हो रहा है। विज्ञान ने जहाँ एक ओर सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है। वहीं दूसरी ओर शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन किये हैं। उसके द्वारा विकसित अनेकों उपकरण, सहायक सामग्री शिक्षण प्रक्रिया में सहायक हैं। अनेक शोधकर्ता अपने शोधों के द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि सहायक सामग्री की सहायता से शिक्षण कार्य करने से प्रशिक्षण तथा अधिगम अधिक प्रभावी एवं बोधगम्य होता है।

आज के युग में संचार एक सशक्त माध्यम बन गया है। प्राचीन काल में महाभारत में संजय ने धृतराष्ट्र को अपनी दिव्य दृष्टि से युद्ध का सीधा प्रसारण किया। आज के भौतिकवादी लोग इस प्रसारण पर विश्वास

नहीं करते पर यह तो मानना ही पड़ेगा कि दूरदर्शन, आकाशवाणी से साम्य रखने वाले जनसंचार के माध्यम का विकास भारत में बहुत पहले हो चुका था। अपनी मनोभावनाओं को अभिव्यक्त करना तथा अपने स्वजनों के साथ वार्तालाप करना। मनुष्य की आद्ध प्रवृत्ति है, संचार या संवाद के बिना आधुनिक जीवन का कोई अस्तित्त्व नहीं है। आम तौर पर देखा जाए तो दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच विचारों अनुभूतियों और ज्ञान का प्रभावकारी आदान–प्रदान ही संचार है। संचार का तात्पर्य लोगों में ज्ञान को इस प्रकार गतिशील बनाना है कि वे उस ज्ञान को क्रिया रूप देते हुए उससे कुछ महत्त्वपूर्ण परिणाम उपलब्ध कर सकें।

संचार के माध्यम से दूसरों के विचारों मान्यताओं और व्यवहार में परिवर्तन लाने की चेष्टा करते हैं, संचार जीवन के साथ आरम्भ होता है तथा जीवन की समाप्ति पर ही इस पर विराम चिन्ह लगता है, संचार के बिना जीवन अर्थहीन ही नहीं, अस्तित्वहीन भी हो जाता है।

वर्तमान युग में अपने और संसार के प्रति लोगों की सोच, संस्कार, रीति–रिवाजों और दृष्टिकोणों पर संचार माध्यमों के प्रभाव को इन्कार नहीं किया जा सकता। जीवन शैली, चयन पर निर्भर होती है और चयन, सूचनाओं तथा सम्पर्क की प्रक्रिया के फल पर निर्भर होता है। संचार माध्यम ये सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में किसी व्यक्ति के पास क्या विकल्प हैं ओर वह क्या चयन कर सकता है। वे अपनी इन अर्थपूर्ण सूचनओं के माध्यम से लोगों की मान्यताओं, सोच, आकांक्षाओं, चयन और व्यवहार और वस्तुतः उनकी जीवन शेली के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अलबत्ता संचार माध्यमों के सम्बन्ध में लोगों का रूझान एकसमान नहीं होता बल्कि संचार माध्यमों से जिसका लगाव जितना अधिक होगा उतना ही उस पर संचार माध्यमों का प्रभाव भी अधिक होगा।

स्पष्ट है कि संचार माध्यम एवं शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध है। संचार माध्यम शिक्षा प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम है। संचार माध्यम के अनेक साधनों–टी0वी0, केबिल, अखबार कम्प्यूटर आदि के द्वारा विद्यार्थियों में मौलिकता प्रवाह, किसी समस्या के प्रति संवेदनशीलता आदि गुणों का विकास किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति पर इसका प्रभाव भिन्न–भिन्न पड़ता है। अतः आवश्यकता यह है कि विभिन्न व्यक्तियों पर संचार माध्यम के प्रभाव की जानकारी प्राप्त की जाये यथानुसार उनकी शिक्षा व्यवस्था की जाये।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों का संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर की छात्राओं संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने

वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों का संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. माध्यमिक स्तर की छात्राओं संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध प्रविधि–

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए शोधकर्त्ता द्वारा 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जनपद स्थित 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से करने के पश्चात् वहाँ अध्ययनरत् 200 छात्र–छात्राओं का चयन न्यादर्श हेतु क्षेत्र न्यादर्शन विधि से किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों द्वारा पूर्व परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक एवं संचार माध्यम के प्रति दृष्टिकोण के लिए स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों का संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

H_{01} माध्यमिक स्तर के छात्रों का संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त शून्य परिकल्पनाओं की जाँच के लिए एफ–परीक्षण का प्रयोग किया गया है और परिणाम सारणी संख्या–01 में दर्शाया गया है।

तालिका–01

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	1452.98	726.49	0.58	F.05(2,97)=3.09
समूहों के अन्दर	97	122878.26	1253.86		
कुल	**99**	**124331.24**	**1980.35**		

*.05 स्तर पर असार्थक

व्याख्या–

सारणी संख्या 01 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान

0.58 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर df =98 पर सारणी मान 3.09 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इस सार्थक एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण रखने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई भिन्नता नहीं है।

इसका कारण यह हो सकता है कि छात्रों द्वारा पाठ्य–पुस्तक का प्रयोग अधिक करना एवं कोचिंग एवं ट्यूशन पर ज्यादा निर्भर रहना हो सकता है साथ ही साथ सामाजिक–आर्थिक स्तर के साथ–साथ पारिवारिक वातावरण का प्रभाव हो सकता है जहाँ इनके अभिभावक द्वारा संचार माध्यम के लिए अधिक छूट न प्रदान किया जाना।

1. माध्यमिक स्तर की छात्राओं का संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

H_{01} माध्यमिक स्तर की छात्राओं का संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त शून्य परिकल्पनाओं की जाँच के लिए एफ–परीक्षण का प्रयोग किया गया है और परिणाम सारणी संख्या–02 में दर्शाया गया है।

तालिका–02

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	1329.64	664.82	0.38	F.05(2,97)=3.09
समूहों के अन्दर	97	173231.32	1767.67		
कुल	**99**	**174560.96**	**2432.49**		

*.05 स्तर पर असार्थक

व्याख्या–

सारणी संख्या 02 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 0.38 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर df =98 पर सारणी मान 3.09 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इस सार्थक एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण रखने वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई भिन्नता नहीं है।

इसका कारण यह हो सकता है कि छात्राओं द्वारा पाठ्य–पुस्तक का प्रयोग अधिक करना एवं कोचिंग एवं ट्यूशन पर ज्यादा निर्भर रहना हो सकता है साथ ही साथ सामाजिक–आर्थिक स्तर के साथ–साथ पारिवारिक वातावरण का प्रभाव हो सकता है जहाँ इनके अभिभावक द्वारा संचार माध्यम के लिए अधिक छूट न प्रदान किया जाना।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष है–

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों का संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के छात्राओं का संचार माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- **चन्द्रा, सुभाष एवं अन्य (2015)**. माध्यमिक शिक्षकों में इन्टरनेट के ज्ञान एवं प्रयोग का विश्लेषणात्मक अध्ययन, Indian Research Journal Management Sociology & Humanities, Vol. 6, Issue-4, ISSN 2277-9809 available on at www.IRJMSH.com
- झा, रजनीश कुमार (2015). इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की शिक्षा : एक अध्ययन, शोध पत्र, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चत्तौड़गढ़, राजस्थान, Indian Stremes Research Journal, Vol. 5, Issue-2, ISSN 2230-7850 available on at www.isrj.org
- पाण्डे, के.पी. (1983), एडवॉन्सड एजुकेशनल साइकोलॉजी फॉर टीचर्स, अमिताश प्रकाशन, मेरठ।
- पाण्डेय, प्रो0 रामसकल (1988), आधुनिक भारतीय शिक्षा दर्शन, भारतीय जनतंत्र और शिक्षा (व्याख्यान), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
- माथुर, एस.एस. (2007), शिक्षण कला एवं शैक्षिक तनीकी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- राजपूत, प्रो. जगमोहन सिंह (2009), क्यों तनावग्रस्त है शिक्षा–व्यवस्था ?, शिक्षा से दूर होते मूल्य एवं संवेदनाएँ, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
- राजमणि सरोज (2005). विद्यार्थियों के व्यवहार पर दूरदर्शन चैनल द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, कानपुर : छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय।
- शाह, माधुरी, आर तथा अन्य (1974), इन्सट्रक्शन इन एजुकेशन, सोमाया पब्लिशर्स, मुम्बई।
- शर्मा, आर.ए. (1980), शिक्षा तकनीकी, माडर्न पब्लिशर्स, मेरठ।
- सिंह, सुदेश (2005), शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
- सांगबिन (2004). मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में स्वायत्त अधिगम दशाओं का सर्वेक्षण चीन के रूडांग ब्रान्च स्कूल ऑफ नॉन टांग रेडियो एण्ड टेलीविजन यूनिवर्सिटी (आर.टी.बी.यू.) पर अध्ययन, www.google.com
- हिथर ग्रिनेगर (2006). शिक्षा में तकनीकी के द्वारा विद्यार्थी के उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव, www.google.com
- श्रीवास्तव, अनुपमा (2012): *शिक्षक शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का अनुप्रयोग, सोवनियर,* इंटरनेशनल सेमीनार बाई द लर्निंग कम्युनिटी ऑन प्रोफेसनल डवलपमेन्ट ऑफ टीचर्स, 17–18 नवम्बर, 2012